चिकित्सा विज्ञान के लिए पद्‌मश्री-डॉ. लक्ष्मीचन्द गुप्ता

ईमानदारी, जवाबदेही और समर्पण ही सफलता के सूत्र

❐ हरेन्द्र सारस्वत

सीमा सुरक्षा बल के पूर्व निदेशक चिकित्सा ग्वालियर वासी डॉ. लक्ष्मीचन्द गुप्ता को देश के चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिये राष्ट्रीय अलंकरण पद्‌मश्री देने की घोषणा की गई।

ग्वालियर में जन्मे प्रतिभाशाली डॉ. गुप्ता ने ग्वालियर में ही स्कूली शिक्षा के बाद चिकित्सा शिक्षा भी ग्वालियर के ही प्रतिष्ठित शासकीय गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय से प्राप्त की।

आपने सन् 1965 में डी.एम.आर.ई. और 1968 में रेडियोलॉजी से एम.डी. करने के बाद 1970 में सीमा सुरक्षा बल टेकनपुर में चिकित्सक के पद से अपनी शासकीय सेवा की शुरुआत की। शासकीय सेवा के साथ ही आपने अध्ययनरत रहकर प्रिवेन्टिव मेडीसिन में भी पुनः एम.डी. की डिग्री हासिल की। सेवाकाल में टेकनपुर स्थित सीमा सुरक्षा बल अकादमी को आकार देने में भी आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अकादमी परिसर में वृक्षारोपण और चित्रकारी के लिये सेवानिवृत्ति के बाद भी आज इन्हें याद किया जाता है।

डॉ. गुप्ता ने अपने शासकीय सेवाकाल के शुरू के सात साल बिना परिवार के टेंटों में बिताये और बाद में पाँच साल ईरान के अहवाज में प्रतिनियुक्ति पर रेडियोलॉजिस्ट के पद पर कार्य किया।

सन् 1988 में डॉ. गुप्ता ने देश के आमजन को बीमारियों से बचाने के लिये जनजागरण को अपना ध्येय बनाया। उन्होंने खुद सचित्र पोस्टर तथा पेम्पलेट बनाये, लेख लिखे, रेडियो, दूरदर्शन और बी.बी.सी. लंदन से कई बार चर्चाओं में सक्रियतापूर्वक भाग लिया। डॉ. गुप्ता ने देश में पहली बार छह हजार लोगों का सेक्स, मधुमेह, रक्तचाप और डाइट सर्वे किया जिसके लिये उन्हें देश का प्रतिष्ठित बी.सी. राय नेशनल अवार्ड और

छाया : आर.सी. इन्दोरिया

सामाजिक क्षेत्र में सराहनीय कार्य के लिये पुलिस मेडल फॉर मेरीटोरियस सर्विसेज प्रदान किया गया। सन् 1993 में आपको विशिष्ट सेवा के लिये राष्ट्रपति का पुलिस मेडल मिला।

डॉ. गुप्ता के अनुसार 'हिन्दी में चिकित्सा की किताबें नहीं थीं, जिसकी आवश्यकता ने मुझे लेखन की ओर प्रेरित किया और मैंने हिन्दी में किताबें लिखना शुरू किया।' कालान्तर में इन उपलब्धियों के साथ ही डॉ. गुप्ता ने चिकित्सा विज्ञान की विभिन्न विधाओं में एक सौ बारह पुस्तकें लिखकर विश्व रिकार्ड बनाया। लेखन की इस असाधारण उपलब्धि के लिये इन्हें सन् 1995 में भारत सरकार द्वारा हिन्दी में चिकित्सा विज्ञान की पुस्तक लिखने पर राष्ट्रीय पुरस्कार से और सन् 2002 में सार्क देशों के 'मिलेनियम मेडिकल ऑथर' के रूप में सम्मानित किया गया।

इसके अलावा चिकित्सा विज्ञान की विशेष उपलब्धियों और जीवनपर्यन्त कार्य के लिये आपको मध्यप्रदेश की मेडिकल काउंसिल द्वारा तत्कालीन ख्यातिप्राप्त चिकित्सक डॉ. आर. एस. धारकर के साथ सम्मानित किया गया था। सन् 2006 में आपको नेशनल अकादमी ऑफ मेडिकल साइंसेज की फेलोशिप मिली।

देश के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय अलंकरण के पीछे डॉ. गुप्ता अपने बड़े भाई ख्यातिप्राप्त अधिवक्ता स्व. जे पी. गुप्ता जी द्वारा दिये गये उन संस्कारों को महत्वपूर्ण मानते हैं, जिन्होंने बेहतर जीवन जीने और लक्ष्य पाने का रास्ता दिखाया। वे कहते हैं कि 'परिवार में एक व्यक्ति यदि सफल हो जाता है तो उस परिवार के छोटे सदस्य भी उससे प्रेरणा लेकर कठिन परिश्रम करते हैं।'

डॉ. गुप्ता कार्य के प्रति ईमानदारी, जवाबदेही और समर्पण को ही सफलता का सूत्र मानते हैं जिससे जीवन में हर असंभव कार्य संभव कार्य में परिणित होता है।

डॉ. लक्ष्मीचन्द गुप्ता का संपूर्ण जीवन कड़ी मेहनत और समय प्रबंधन की सतत साधना है जिसके बल पर उन्होंने महर्षि गालव की तपोभूमि और संगीत सम्राट तानसेन की साधना स्थली ऐतिहासिक महानगर ग्वालियर को ही नहीं वरन् समूचे मध्यप्रदेश को राष्ट्रीय अलंकरण पद्‌मश्री पाकर राष्ट्रीय क्षितिज पर गौरवान्वित किया है। साथ ही देश में गौरवान्वित हुआ ग्वालियर का गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय डॉ. लक्ष्मीचन्द गुप्ता को पद्‌मश्री मिलने के साथ ही मध्यप्रदेश के ग्वालियर स्थित शासकीय गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय के ऐतिहासिक गौरव ने देश के चिकित्सा क्षेत्र में एक पायदान और छू लिया है। डॉ. गुप्ता इस चिकित्सा महाविद्यालय की आठवीं प्रतिभा हैं जिन्हें पद्‌मश्री के राष्ट्रीय अलंकरण से सम्मानित किया गया है। इनके पूर्व इसी महाविद्यालय के सात अन्य चिकित्सकों डॉ. लीला फाटक, डॉ. आर.एस. धारकर, डॉ. एम.जी. देव, डॉ. हैमल, डॉ. पासी, डॉ. बी.एन.बी. राव और डॉ. बक्षी को भी पद्‌मश्री से सम्मानित किया जा चुका है।

(लेखक पत्रकार हैं।) ❖